बच्चे और बच्चियां कहते हैं कि हम तो ल.ना. बनेंगे। गोया सभी गुलाब के फूल बनेंगे। जो मुख से कहा जाता है तो वैसा पुरुषार्थ भी करना होता है। सभी को बताना है कि उंच ते उंच शिवबाबा है। भगवानोवाच्य है कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप विनाश होंगे। यह पैगाम सभी को देना है। पतित–पावन बाप है उनको ही सभी बुलाते हैं। वो बाप है ,उनके तुम बच्चे हो। बच्चे तो जरूर साथ में ही रहते हैं। पावन बाप के साथ पावन बच्चे ही रहते हैं। रावण राज्य में पतित बने हैं। भक्ति में अनेक प्रकार के नाच नचते हैं। अब दीपमाला आती है। व्यापारियों को तकलीफ होगी। वो लक्ष्मी की पूजा करते हैं ब्राह्मणों को बुलाकर। सफाई करवाते हैं। बाबा के पास व्यापारी तो बहुत ही आते हैं। खयाल करते होंगे। ग्राहक को बुलाना होगा। लक्ष्मी की पूजा करनी होगी। हम तो खुद ही ब्राह्मण हैं जो कि देवता बन रहे हैं और वो शूद्र। तो उस हालत में क्या करना चाहिए?व्यापारी चौपड़ा रखने वाले तो सभी होंगे। धन वृद्धि को नहीं पाता है। यह सभी तो तिखताल है। यह तो है रस्म–रिवाज। बच्चे तो मूंझेंगे कि क्या करे?बाबा कहेंगे कि वो सब भल करो। किसी को भी राजी करने के लिए थोड़ी बहुत पूजा कर लेनी चाहिए। बोलो हम पूज्य बन रहे हैं। उंच ते उंच भगवान सबका पूज्य एक ही है। सभी पुजारी उनको याद करते हैं। पूज्य देवतायें याद नहीं करते हैं। उनको बाप ने पूज्य बनाया ना। तो किसी को राजी करना पड़ता है। अगर भक्ति छोड़ देंगे तो हलचल मच जावेगी। ज्ञानमार्ग में फिर युक्ति ...चरित्र बहुत चाहिए। पाप तो नहीं है ना। कृष्ण आदि को पूजना पाप नहीं है। पाप तो है गाली देना। बाकी तो पूजा करना,लक्ष्मी का आवाहन आदि करना पूजा नहीं है। दुकान में तो जरूर ही करनी पड़े। नहीं तो सभी क्या कहेंगे?कल तो पूजा करते थे,आज नहीं करते हैं। इसलिए बाबा बता देते हैं कि करनी चाहिए। तो किसी को खयाल नहीं आवे। याद फिर भी शिवबाबा को ही करना है ;परंतु औरों को दिखाने लिए मुंह हिला देना है। उसमें पाप नहीं है। ईश्वर को सर्वव्यापी मानना बड़ा पाप है। अभी तुम बच्चे समझते हो कि हमारी तो बेसमझ बुद्धि थी जो कि यह सभी करते थे। अभी तो अविनाशी रत्नों का व्यापारी मिला है। तब क्या करें?बाप तो इनमें बैठकर सर्विस करते थे। सभी को थोड़े ही छोड़ना है। इनको तो निमित्त बनना ही था। तो धंधे आदि से दिल से हट गई। तुम बच्चों को तो हटानी नहीं है। पैसे कमाकर फिर इस सर्विस में लगाने पर पाई भी अशर्फी बन जावे। सेंटर्स खोलेंगे उसमें फिर सर्विस करेंगे तो उसमें पैसे तो चाहिए ही होते हैं ना। पैसों ही सर्विस करेंगे। कभी भी कोई बात हो तो फट से पूछो। कहीं पर पार्टी में जाना है,वहां अगर कहते हो कि हम दूसरे के हाथ का नहीं खाते हैं तो वो फील करते हैं। कहते हैं कि हम कोई खराब हैं क्या?हम मेहतर हैं क्या?तो कोई भी बात सामने आती है तो पूछनी चाहिए। आजकल तो रिश्वत भी बहुत चलती है। नम्बरवार सारे लाइन वाले बांटकर लेते हैं। फिर अगर कोई नहीं लेवे तो नौकरी ही से छुड़वा दें। .... एक बच्चे को कोई भी आफत आ जावे तो पूछ सकते हैं। पतित से पावन बनने की हमको राय दो। तुम बच्चे जानते हो कि हम पुनर्जन्म लेते,गंगा स्नान करते आये हैं। बहुत गपोड़े लगाते हैं कि हम इनको ले जाते हैं। हम थोड़े ही स्नान करते हैं। हम तो इनकी सेवा करते हैं। गंगा जल का बहुत प्रभाव .....है। मनुष्य पीने लिए रख देते हैं। विलायत में भी बहुत साथ में ले जाते हैं। तुम बच्चों को तो सभी खिटपिटों से बिल्कुल ही छुड़वा दिया है। बाप कहते हैं कि कुछ भी नहीं करना है। तो भी युक्ति से चलना है। कृष्ण की भक्ति करो। अच्छा जी, करना हूँ। रांझू रमजबाज बनना होता है। कोई भी बात ध्यान में हो तो पूछ सकते हो। मूंझते हो तो बाबा बता सकते हैं। पूछो कहीं पर पाप नहीं हो....बाबा तो बैठे ही हैं। कोई2 ब्राह्मणी कहती है कि मेरे पूछे बिना ,दिखाने बिना चीज वा पत्र नहीं भेजो। नहीं–नहीं, यह तो कहने का हक ही नहीं है। हर एक को हक है। बाबा को पता ही कैसे पड़े कि टीचर ठीक पढ़ाते हैं वा नहीं। सवेरे उठते हैं वा नहीं। बाबा को लिख देना चाहिए हमारी ब्राह्मणी

हमको कहती है कि सवेरे में उठ याद करो और खुद तो देरी से उठती है। जांच करनी चाहिए कि किस समय उठती है। कुकड ज्ञानी तो नहीं है। इसलिए कोई को भी हक है समाचार देने का। हमारी ब्राह्मणी कहीं पर नवाबी से तो नहीं चलती है। सेहत ठीक है तो सब कुछ हाथ से करना चाहिए। ऐसे नहीं कि ब्राह्मणी रानी होकर बैठे। सर्विस नहीं लेनी है। बीमार है तो दूसरी बात है। नहीं तो आदत पड़ जावेगी। चाय ले आओ,रोटी ले (आओ)। नवाब ही बन जाती है। बाबा कितनी निर्मानता से चलते हैं। उछल से गुस्सा नहीं, बहुत मीठा बनना है,जो कि किसी को दुःख न हो। सभी सम्पूर्ण तो नहीं बने हैं ना। समझानी देनी चाहिए। जैसा कर्म वो करेंगे फिर वैसा ही दूसरे भी करेंगे। फिर नवाब बन जाती हैं। यहां आते हैं तो बाबा हल्का करते हैं। निरहंकारी होकर रहना है। निराकार आते जरूर हैं शरीर में। वहां ही दिखाते हैं कि मैं निरअहंकारी हूँ नहीं कहे कि तुम पतितों के पास आने की मुझे क्या दरकार है। तुम बच्चों को नम्रता में बहुत रहना है। क्रोध जो करते हैं उनका रजिस्टर में खाता खराब हो जाता है। जांच करनी चाहिए। माया बहुत चक्र में ले आती है। स्वर्ग में तो पुण्यात्मायें ही होती हैं। यह है पापात्माओं की दुनियां। वो तो है पुण्यात्माओं की दुनियां। कृष्ण को महात्मा भी कहते हैं ;परंतु यहां के महात्मायें सब हैं झूठे2। यहां सब हैं पापात्मायें। महान कोई को नहीं (कह)सकते हैं। आत्मा को महानात्मा कह कैसे सकते हैं?एक गीत भी बनाया था कि साधु अक्षर बेमाना..... .....बाप से ही बेमुख कर देते हैं। अपनी पूजा करवाने वाले को हिरण्यकश्यप कहा जाता है। चरणामृत बैठकर उनका पीते हैं। कहां पर तो देवताओं का चरणामृत ,कहां फिर मनुष्यों का। बाप ही आकर सब समझाते हैं। रावणराज्य में तुम्हारा कर्म विकर्म हो जाता है। फिर आधा कल्प में तुम सुखधाम का मालिक बन जाते हो। प्रदर्शनी आदि में जो इतना खर्चा होता है। प्रजा ढेर बन जावेगी। अब भी विचार करो कि कितनी प्रजा बननी है।